भूमिका

लोकगीत लोकजीवन की अनूठी, मधुर और लोकप्रिय गेयात्मक विधा है। यह गीत लोक संस्कृति का सुस्पष्ट दर्पण है, जिसमें हम लोक-मानस की स्पष्ट अनुगूँज को सकते हैं। लोक समाज में मौखिक परम्परा के रूप में आदिकाल से चली आ रहा है। लोकगीत लोक जीवन के मौखिक दस्तावेज हैं। इनके आधार पर हम लोक संस्कृति के स्वरूप को स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं और साथ ही उसका विवेचन भी कर सकते हैं। हम देखते हैं कि जैसे-जैसे समाज में परिवर्तन होता है, उसी प्रकार लोकगीतों का भी स्वरूप बदलता रहता है। समाज में रहने वाले लोगों का व्यवहार, खान-पान, रहन-सहन, बोली-भाषा आदि में भी परिवर्तन होता रहता है।

लोकगीत एक ऐसी लोक सांस्कृतिक परिघटना है जिसमें मनुष्य अपने सामाजिक अनुभवों को शब्दों के द्वारा अभिव्यक्त करता है।लोकगीत ही समाज और उसकी संरचना एवं विभिन्न संस्थाओं जैसे- परिवार, विवाह, नातेदारी आदि के साथ-साथ धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक संस्थाओं के आधार, प्रकृति एवं स्वरूप-विकास तथा परिवर्तन और उनके प्रकार्यात्मक पक्ष को बोधगम्य बनाने में सहयोग करते हैं। यही कारण है कि प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में लोकगीतों के पर पड़ने वाले सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रभावों की तरफ इंगित किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध 'मावची बोली के लोकगीतों का संग्रह और विश्लेषण' के अंतर्गत मावची बोली के लोकगीतों का संग्रह संस्कारगीत, श्रमगीत, ऋतुगीत, रोडाली गीत, कुलदेवी गीत, पर्व एवं त्यौहार गीत और लोरीगीत के नाम से किया गया है। इसके साथ ही इन गीतों के रूप-स्वरूप पर भी विस्तृत बात की गयी है। सुविधा अनुसार इस शोध विषय को चार आध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय में 'मावची बोली का परिचय एवं क्षेत्र' है। इसके अंतर्गत बोली की परिभाषा एवं स्वरूप के साथ-साथ भाषा और बोली के अंतर को भी समझने का प्रयास किया

गया है। इसके साथ ही मावची बोली के उद्भव और विकास की चर्चा करते हुए उसके क्षेत्र के निर्धारण एवं उस क्षेत्र के साहित्य पर बात की गयी है।

द्वितीय अध्याय 'मावची भाषी समाज का परिवेश' में मावची समुदाय के लोगों पर पड़ने वाले सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभावों को दिखाने का प्रयास किया गया है ।तृतीय अध्याय 'मावची समुदाय की लोक संस्कृति' के अंतर्गत लोक संस्कृति को परिभाषित करने के साथ ही मावची एवं भील, कोंकणी, पावरा जनजाति की लोक संस्कृति को भी समझने का प्रयास किया गया है। इसके उल्लेख के पीछे प्रमुख कारण है कि हम इन सभी जातियों की सांस्कृतिक विभिन्नता को आसानी से समझ सकें तथा इनके लोकगीतों से भी भली-भांति परिचित हो सकें।

चतुर्थ अध्याय 'मवाची लोकगीतों का विश्लेष्णात्मक अध्ययन' के अंतर्गत मावची समाज में प्रचलित लोकगीतों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। हम लोकगीतों के सृजन के पीछे के वास्तविक कारणों के बारे में जान सकें तथा साथ ही उन गीतों के स्वरूप को भी समझ सकें।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए मैं अपने शोध निर्देशक आदरणीय प्रो. कृष्ण कुमार सिंहका आभारी हूँ जिन्होंने मुझे इस विषय पर स्वतंत्र रूप से कार्य करने की आजादी दी और समय-समय पर मेरा मार्गदर्शन करते रहे। इसके साथ ही मैं हिंदी एवं तुलनात्मक विभाग के अन्य अध्यापकों, प्रो. प्रीति सागर, डॉ. रामानुज अस्थाना, डॉ, बीर पाल सिंह, डॉ. अशोकनाथ त्रिपाठी, डॉ. सुनील कुमार और डॉ. रूपेश कुमार सिंह का आभारी हूँ जिन्होंने यह शोध कार्य करने की प्रेरणा दी।

मैं अपने माता-पिता (श्रीमती ललिता एवं श्री राजु) एवं भाइयों का भी आभारी हूँ, जिन्होंने मेरे जीवन की संघर्षमय परिस्थितियों में ज्ञानार्जन के लिए प्रेरणा दी। इसी का परिणाम है कि मैं यह शोध कार्य पूरा कर सका ।इसके

साथ ही मैं अपने बड़े भाइयों जितेन्द्र सोनकर, गजानन कदम, दिलीप गिऱ्हे, प्रेम कुमार, रंजीत कुमार निषाद, प्रफुल्ल मेश्राम, संजय पाडवी, हर्षल. जे. गावीत, आर. जी. जाधव, प्रा. आर. के. तुपे, मुन्ना. एस. गावीत, अरविंद गावीत, वाडग्या गावीत आदि का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे 'मावची बोली के लोकगीतों का संग्रह एवं विश्लेषण' विषय को समझने-समझाने में काफी मदद की। इसी के साथ मैं गाँवों में लोकगीतों का संग्रह करने में मेरे सहयोगी मित्र गावीत राकेश गुलाब, गावीत दीपक काशीराम, गावीत दीपिका, गावीत सारिफा आदि ने भी मेरी मदद की उनका भी आभारी हूँ। इसके साथ ही मैं अपनी अभिन्न साथी रीमा पटले का विशेष रूप से धन्यवाद करता हूँ। मेरे सहपाठी मित्र विजय कुमार, अमित कुमार, अरविंद यादव, सत्यवंत यादव, नवीन सिंह, रामलखन, लोकेश कुमार, गोविन्द वर्मा, अरुण सोनी, अभय जैन आदि का भी आभारी हूँ कि उन्होंने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से मेरे शोध विषय से संबंधित प्रश्नों पर विचार-विमर्श कर महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

(गावीत राकेश राजु)